International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

प्रेमचंद के साहित्य में नारी संघर्ष और चुनौतियाँ

कुमारी ममता सिंह

शोध छात्रा, कलिंगा विश्विद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सारांश

मुंशी प्रेमचंद एक जनवादी तथा प्रगतिशील लेखक थे। प्रेमचंद हिंदी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक रहे है | उन्होंने कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया, जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया | प्रेमचंद ने अपना लेखन सन 1908 ई. के आसपास शुरु किया और 1936 तक उनकी कलम बिना रुके चलती रही. यह वह समय था जब भारतीय समाज में स्त्रियाँ दासी की तरह जी रही थी | सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने ठीक ही लिखा था कि हमारे समाज में स्त्रियाँ दासों की दासियाँ हैं | यह वह समय था , जिसमें स्त्रियाँ एक साथ उपनिवेशवाद और सामंतवाद की चक्की में पिस रही थी | उन्हें समाज में पुरुषों के जैसा अधिकार प्राप्त नहीं था, यही वजह थी कि प्रेमचंद नारियों के तत्कालीन दशा से संतुष्ट नहीं थे | मध्यवर्ग, निम्नवर्ग की नारियां अपने अधिकारों से वंचित थी। ज़मींदार, महाजन आदि परिवार की स्त्रियाँ घरेलू कार्यों तक सीमित थी जबकि काश्तकार आदि वर्ग की स्त्रियाँ घरेलू कार्यों के साथ-साथ खेतों में भी काम करती करती थीं। मध्यम वर्ग के परिवारों में नारी-शिक्षा को महत्व नहीं दिया जाता था। ऐसे समय में प्रेमचंद ने नारी समस्या को मुख्य विषय बनाया तथा अपने मध्यम व् निम्न वर्ग की स्त्रियों को अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही नहीं बल्कि अपने उपन्यासएवं कहानियों के माध्यम से नारी की दुर्दशाको उजागर किया, जो हिंदी साहित्य को दी हुई अपूर्व देन है। प्रेमचंद ने कहा है- नारी की उन्नति के बिना समाज का विकास संभव नहीं है, उसे समाज में पूरा आदर दिया जाना चाहिए तभी समाज उन्नति करेगा। प्रेमचंद की नारी भावना ने साहित्य में एक युगांतर प्रस्तुत किया है।

बीज शब्द :समाज में नारी की दशा, संघर्ष और चुनौतियाँ

प्रस्तावना-

कहते है कि साहित्य “समाज का दर्पण” होता है और प्रेमचंद के साहित्य में भारतीय समाज का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक पहलुओं का जितना सटीक और प्रमाणिक जानकारी मिलती है उतना शायद ही किसी साहित्य में मिले | प्रेमचंद अपने साहित्य में समाज की मूक जनता के साथ-साथ हाशिए पर खड़ी नारी समस्याओं की ही बात नहीं करते बल्कि नारी मुक्ति की भी बात करते है | अगर बात हम साहित्य की कर तो साहित्य जगत में भी नारी की स्थिति अच्छी नहीं थी। आदिकाल हो, भक्तिकाल हो या रीतिकाल प्राय: नारी के जो

चित्र उभरकर सामने आते हैं, उससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय वह एक भोग्या या मनोरंजन का साधन मात्र बनकर रह गई थी। आदिकाल में प्राय: जितने भी रासो ग्रंथों का निर्माण हुआ, जिसका मुख्य उद्देश्य तत्कालीन राजाओं की वीरता, उनके साहस, पराक्रम को दर्शाना ही था, किन्तु ऐसे युद्धों के मूल में किसी न किसी नारी की परिकल्पना अवश्य मौजूद होती थी। दरबारी कवि भी अपने आश्रयदाता राजाओं को खुश करने के लिए उनकी इच्छा के अनुरूप श्रृंगारिक रचनाएं करते थे, जिसमें नारी के देह या नहीं उसके अंग- उपांगो का वर्णन ही अधिक रहता था। भक्तिकाल में भी नारी की श्रृंगारिक वार्णनों की भरमार है। प्रेमचंद पूर्वके कथाकारोंकी एक पूरी की पूरी परंपरा है जिन्होंने हिंदी कथा साहित्य में प्रारंभिक प्रयास किए हैं | यह प्रयास अत्यधिक रूप से बहुत अधिक अनुशासित तथा पुष्ट नहीं है | लेकिन इनके अध्ययन के बिना हिंदी कथा साहित्य का अध्ययन अधूरा ही होगा | डॉ लक्ष्मण सिंह बिष्ट का यह कथन इस संदर्भ में सही माना जाना जाता है कि प्रेमचंद का उदय एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में हुआ और हिंदी कथा साहित्य का प्रारंभ वहीं से हुआ इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदी कथा साहित्य का विकसित रूप हमें प्रेमचंद की रचनाओं के बाद ही देखने को मिला है| प्रेमचंद स्त्री को उसके गुणों के कारण पुरुष से श्रेष्ठ मानते थे । वे मानते थे कि त्याग और वात्सल्य की मूर्ति नारी के जीवन का वास्तविक आधार प्रेम है और यही उसकी मूल प्रकृति भी । वे नारी का बेहद सम्मान करते थे । प्रेमचंद के नारी पात्रों में शहरीय वर्ग, गांव का किसान समुदाय और अभिजात्य वर्ग के दर्शन होते हैं । प्रेमचन्द के उपन्यास स्त्रियों और पुरुषों के बीच ऐसे सामंजस्य और तालमेल की पड़ताल करते है जिससे सामाजिक व्यवस्था पुष्ट ओर स्थायी हो। भारत के पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियां चाहे जिस भी भूमिका में हो बेटी हो, मां हो, बहू हो या भाभी, ननद और देवरानी हो, उनकी वास्तविक तस्वीर रूपायित करने में प्रेमचन्द ने अन्य लेखको के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य किया हे। क्योकि जैसी जीवन्त नारी पात्रों का चित्रण प्रेमचन्द ने किया है, वैसी कही और नज़र नहीं आती।

नारियों की अशिक्षा रूढ़िवादिता आदि के विरुद्ध एक क्रांतिकारी पहल आर्य समाज ने की, यही नहीं विधवा विवाह और स्त्री शिक्षा की पुरजोर वकालत भी आर्य समाज की ओर से की गई| ब्रहम समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय ने अमानुविक सती प्रथा का अंत कर विधवा विवाह का पक्ष सबल किया | स्त्रियों के संपत्ति संबंधी अधिकार और अंतर्जातीय विवाह के प्रति भी ब्रहम समाज ने खासा बल दिया | सन 1985 ईसवी मेंस्थापित इंडियन नेशनल कांग्रेस ने स्त्रियों की दशा मेंसुधार केलिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए| नारी के समान अधिकारों के लिए आवाज उठाना तथा राजनीतिक क्षेत्र नारी चेतना के लिए उल्लेखनीय कार्य किया | बाल विवाह, पर्दा प्रथा, छुआछूत में उन्हें अग्रसर करना कांग्रेस का प्रमुख उद्देश्य बीसवीं शताब्दी की यह सबसे बड़ी उपलब्धि है कि नारियां स्वयं अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सामने आई |महात्मा गांधी नारी चेतना के सजग प्रहरी हुए गांधी जी ने बाल विवाह के भयंकर परिणामों की ओर नारी जाति का ध्यान दिलाकर देश की आशाएं विधवाओं के विषय में भी अपने विचार व्यक्त किए गांधी जी का कहना था -कि नारी पुरुष की गुलाम नहीं है| वह अर्धांगिनी है, दामिनी है| उसको मित्र समझना चाहिए, किंतु पुरुष वर्ग उसे अपना सहयोगी मित्र ना मानकर अपने को उसका स्वामी मानता है, शासक

मानता है, यह सब पुरुष का अन्याय है| गांधीजी स्त्रियों और पुरुषों के लिए समान अधिकार चाहते थे | वह लड़के लड़कियों के साथ समान व्यवहार करते थे | वे चाहते थे कि महिला अनुचित कानूनों का विरोध करें तभी बुराई से बुराई को काटा जा सकता है|

1930 के आंदोलन में भारतीय नारी की स्थिति में बहुत परिवर्तन हुआ अब नारी वर्ग राजनीति में भाग लेने लगा | देश की जागृति ने हिंदी कथाकारों का ध्यान भी अपनी ओर आकर्षित किया | प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य का सृजन गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर किया! प्रेमचंद के सभी स्त्री पात्र इस नारी जागृति से प्रभावित हुए | सशक्त वर्ग की नारियों ने स्वयं को देशभक्ति के लिए बलिदान किया गोदावरी, मुन्नी, मृदुला आदि पात्र प्रेमचंद परंपरा के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं | सजग साहित्यकार अपने युग की हलचलों के साथ अपने समकालीन साहित्य परिदृश्य से भी प्रभावित रहे बिना नहीं रह सकता |प्रेमचंद भी अपने समकालीन विदेशी साहित्य और लोग इन परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके | नारी चेतना के विविध स्वरूप प्रेमचंद के कथा साहित्य में देखने को मिलते हैं | मुंशी प्रेमचंद ने अपने साहित्य में जिस परिदृश्य को चित्रित किया है वो कतई नारी के अनुकूल नहीं रहा है और नारी उस काल में समाज के पिछले पन्ने का ही प्रतिनिधित्व करने वाली रहा करती थी,लेकिन इसके बावजूद मुंशी प्रेमचंद केसाहित्य में नारी चरित्र उभरकर सामने आया है और इस साहित्य को देखकर लगता है कि मानों नारी समाज की मुख्यधारा का प्रतिनिधित्व कर रही है और पुरुष हासिये पर फेंक दिये गये हैं। प्रेमचंद के दो दर्जन से अधिक उपन्यासों में से निर्मला, मंगलसूत्र, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा,तो ऐसे उपन्यास हैं जो पूर्णरूपेण नारी चरित्रों पर ही केन्द्रित रहे हैं तो अन्य भी जो उपन्यास रहे हैं उनमें भी स्त्री चरित्र को पुरुष के समानांतर ही प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद की सैंकड़ो कहानियों में से जो कुछेक अति प्रसिद्ध कथाएँ रही हैं वो भी अपने प्रमुख नारी चरित्रों के कारण जानी जाती है जिनमें से ठाकुर का कुआँ, पूस की रात, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दूध का दाम, कफ़न इत्यादि अति प्रसिद्ध हैं।उनके साहित्य में प्रस्तुत नारी छवि को देख ऐसा जान पड़ता है कि मानों समाज में मनोवंचित गुणों की वाहक मात्र नारी ही है और जो पुरुष मानवीय गुणों से संपन्न हैं, वे भी नारी के प्रभाव में आकर ही मानवीयता से संपन्न हुए हैं।

प्रेमचंद ने नारी को प्रेम शक्ति का विकास माना है। प्रेमचंद नारी के विकास में विवाह को बंधन मानते हैं। वे कहते हैं- नारी का जीवन विवाह के बाद बदल जाता है। वैवाहिक असंगतियाँ समाज में अनेक विकृतियों को पनपने का अवसर देती हैं। इसलिए उन्होंने नारी की वैवाहिक समस्याओं से सम्बंधित अनेक कहानियाँ लिखी हैं -धर्म संकट, सौत, भूल, स्वर्ग की देवी, नया विवाह, सोहाग का शव, मिस पद्मा आदि।

प्रेमचंद नारी के पुनर्विवाह पर बल देते हैं। वे कहते हैं - जब पत्नी मर जाए तो पुरुष दूसरा विवाह कर लेता है। इसलिए नारी को भी पति के मर जाने पर पुनर्विवाह का अधिकार है। इन्होंने विधवा-विवाह से सम्बंधित धिक्कार,

स्वामिन, प्रेम की होली, बालक, बेटों वाली विधवा, ज्योति आदि कहानियाँ लिखीं जो प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ मानसरोवर भाग -१ में संकलित हैं।

प्रेमचंद ने नारी वर्ग की जिन समस्याओं पर प्रकाश डाला है, वे अधिकांशतः मध्यम वर्ग की नारियों की अपनी ही समस्याएँ हैं। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों, सेवासदन, निर्मला, गोदान आदि के माध्यम से मध्यम वर्ग की दुविधा भरी परिस्थिति का चित्रण किया है। मध्यम वर्ग की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि वह बौद्धिक विकास की दृष्टि से उच्च वर्ग के तुल्य होता है, किन्तु आर्थिक अभाव के कारण उसका जीवन विकसित नहीं हो पाता। परिणामतः वह असन्तोष और घुटन का अनुभव करता रहता है। आर्थिक अभाव और मर्यादा पालन से उत्पन्न अनेक प्रकार की कुरीतियों ने जिस रूप में इस वर्ग के नर नारियों को संतप्त किया है, उसका वर्णन प्रेमचंद के अधिकांश साहित्य में उपलब्ध है। डा० गोविन्द त्रिगुणायत के अनुसार, "प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में दलित मानवता तथा नारियों के प्रति सहानुभूति का भाव प्रदर्शित किया है, इनका आदर्शवाद इनकी इसी सहानुभूति का परिणाम है"। दहेज प्रथा आज भी समाज में नारी शोषण का कारण है| प्रेमचंद काल में भी दहेज प्रथा थी और यही वजह है थी कि लोग बेटी होने पर शोक मनाते थे| उन्होंने अपनी “नैराश्य लीला” कहानी में इसी कड़वी सच्चाई का वर्णन किया है| निरुपमा को केवल बेटियाँ होने के कार्ण उसे पति द्वारा प्रताडित होना पड़ता है| अंत में पति के तानों से शोक ग्रस्त होकर उसकी मृत्यु हो जाती है|कहानी में प्रेमचंद ने दिखाया है कि कोई भी मां बाप दहेज की चिंता से मुक्त नहीं हो सकता|

“निर्मला”उपन्यास की निर्मला अनमेल विवाह की प्रथा पर बलिदान होने वाली नारी की अत्यंत मार्मिक कथा है| कायाकल्प में भी अनमेल विवाह की समस्या पर प्रकाश डाला गया है- “लड़की कंगाल के दे दे पर बूढ़े को ना दें! गरीब रहेगी तो क्या, जन्म भर रोनातो ना रहेगा” | प्रेमचंद आदर्शवादी लेखक थे | अतः उन्होंने पुरानी पीढ़ियों का विश्लेषण तो किया परंतु वे नई आस्थाओं को भी पूर्ण रूप से ना स्वीकार पाए उनके नारी पात्र सभी प्रकार की सामाजिक रूढ़ियों से ग्रस्त है | किंतु वह कहीं भी विद्रोह करके समाज में एडजस्ट नहीं हो पाए! बाल विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा | जय शिव शंभू दिनों से तंग आकर भी प्रेमचंद तलाक प्रथा का समर्थन नहीं कर पाए कायाकल्प में चक्रधर से यह कहलवा कर उन्होंने तलाक प्रथा की सीमा बांध दी है! “जब किसी पुरुष का एक स्त्री के साथ पति पत्नी का संबंध हो जाए तो पुरुष का धर्म है कि जब तक स्त्री की ओर से कोई विरुद्ध आचरण ना देखें उस संबंध को निभाएं” |गोदान के प्रोफेसर मेहता भी नारी को गैर पुरूष के समकक्ष लाने के पक्ष में नही है !

अपने युग की सामाजिक कुरीतियों तथा विसंगति मान्यता का चित्रण करने में प्रेमचंद ने सफलता पाई है | सामाजिक कुरीतियों में प्रेमचंद ने दहेज प्रथा को सबसे बड़ा अभिशाप माना है | हिंदू समाज की वैवाहिक परंपरा इतनी दूषित, इतनी चिंताजनक, इतनी भयंकर हो गई है कि कुछ समझ में नहीं आता! उनका सुधार क्यों कर रहे हो | विरले ही ऐसे माता-पिता होंगे, जिनके साथ पुत्रों के बाद भी एक कन्या उत्पन्न हो जाए, तो वह शहर उसका

स्वागत करें | इसका कारण यह है कि दहेज की दर दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है | कितने ही माता-पिता दहेज की चिंता उसे घुल मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं | कोई सन्यास ग्रहण कर लेता है | कोई कन्या को बूढ़े के गले मढ़ कर अपना गला छुड़ा लेता है | प्रेमचंद युग में मध्यवर्ग की आर्थिक दशा शोचनीय थी | धन अभाव के कारण “भूत” की नायिका खिन्नी के मां-बाप उसका विवाह सीतानाथ जैसे 50 वर्षीय युवक के साथ करने को तैयार हो जाते हैं और “उदार” कहानी में मां-बाप लड़की की मृत्यु पर प्रसन्न होते हैं | “एक आंच की कसर” में प्रेमचंद ने उन समाज सुधारकों की पोल खोली है, जो चोरी-छिपे दहेज लेते थे और माल भी चुपके चुपके उड़ाते थे और यश भी कमाते थे| यह व्यवहार कुशल सुधारक एक ना एक ऐसा बहाना निकाल लेते कि कन्या का पिता निरुत्तर हो जाता साहब हमें तो दहेज से सख्त नफरत है यह मेरे सिद्धांत के विरुद्ध है, पर क्या करूं बच्चे की अम्मीजान नहीं मानती! प्रेमचंद ने दहेज समस्या को ही अनमेल विवाह का प्रमुख कारण माना है!

प्रेमचंद की दृष्टि में दहेज नैतिक समस्या है आर्थिक नहीं, लोक नैतिक दृष्टि से इतने पतित हो गए हैं कि अपने पुत्र की पढ़ाई का खर्च और अपनी पुत्री के विवाह का व्यय अपने पुरुषार्थ की कमाई से नहीं दहेज की रकम से वसूलना चाहते हैं | “कुसुम”, में पति कुसुम से इसलिए नहीं बोलता कि कुसुम अपने पिता से उसके विलायत जाने का खर्च लाकर नहीं देती | ऐसे में प्रेमचंद कहते हैं बाहरी दुनिया और वाह रे हिंदू समाज, तेरे यहां ऐसे ऐसे स्वार्थ के दास पड़े हुए हैं जो एक अबला का जीवन संकट में डाल कर उसके पिता पर ऐसा अत्याचार दबाव डालकर ऊंचा पद प्राप्त करना चाहते हैं| विद्यार्जन के लिए विदेश जाना बुरा नहीं ईश्वर सामर्थ्य तो शौक से जाओ किंतु पत्नी का परित्याग कर के ससुर पर भार रखना निर्णय ताकि पराकाष्ठा है तारीफ की बात तो तब थी कि तुम अपने पुरुषार्थ से जाते |

प्रेमचंद ने ग्रामीण नारी में मुख्या पात्र के रूप में धनिया का बर्णन किया है । ‘गोदान ‘ में धनिया के बारे में बताया है – ” धनिया इतनी व्यवहार – कुशल न थी । उसका विचार था कि हम जमींदार के खेत जाते है, तो वह अपना लगान ही लेगा । उसकी खुशामद क्यों करे? “धनिया भारतीय नारी के समान दुःख और बिपदा में सदैव अपने पति की संगिनी रही है। वह अन्याय को सिर झुकाकर सहन नहीं करती है। वह होरी के साथ संघर्ष के स्थितियों से गुजरती है। उसके बराबर न और कोई परिश्रम करने वाली है और न किसी पर सरस्वती की ऐसी कृपा है ।जब वह दातादीन के यहाँ मजदूरी करते हुए हाँफ रही है तो दातादीन हँसते हैं ‘ अगर यही हाल है जो भीख भी माँगोगी। धनिया तुरंत उत्तर देती है ‘ भीख माँगो तुम , जो भिक्मंगी हो, की जाट हो। हम तो मजदूर ठहरे , जहाँ काम करेंगे , वहीं चार पैसे पाएंगे ।’ इस प्रकार धनिया स्वाभिमानी और तेजस्विनी नारी है।

डॉ रामविलास शर्मा के शब्दों में – “वह ऊपर से कठोर है लेकिन ह्रदय वहुत कोमल है ।” अर्थात जब झुनिया पांच महीने का गर्भ लेकर धनिया के यहाँ आ जाती है , तो पहले वे वह बिगड़ती है किन्तु होरी के झुनिया पर नाराज होने पर उसका पक्ष लेती है । प्रेमचंद धनिया के इस रूप का वर्णन इन शब्दों में करते हैं – ‘ धनिया का मातृ – स्नेह उस अँधेरे में भी जैसे दीपक के समान उसकी चिंता जर्जर आकृति को शोभा प्रदान करने लगा। धनिया की यही मातृत्व

भावना से झुनिया की रक्षा करती रहती है । सिलिया चमारिन भी एक त्याग की मूर्ति है । मातादीन के लिए सब कुछ त्याग देने, छोड़ने को तैयार है । सिलिया कहती है – " मजदूरी करूँगी , भीख मांगूंगी , लेकिन तुम्हे न छोड़ूंगी ।" इस प्रकार गांव की स्त्रियों को शोषण का शिकार बनना पड़ता । दातादीन, नोखेराम, झिंगुरी सिंह आदि महाजनों का भोग बनती है।

प्रेमचंद ने अपने साहित्य में गांवों की स्त्रियों को अत्याचार से बचाने की पूरी कोशिश की है ।पर्दा प्रथा , बाल-विवाह ,अनमेल विवाह अथवा अन्य सामाजिक कुरीतियों के समानांतर प्रेमचंद कालीन समाज वेश्या समस्या से भी जूझ रहा था | प्रेमचंद मानते हैं कि कोई भी नारी स्वेच्छा से वैश्या नहीं बनती उसे बनने को बाध्य किया जाता है | नारी अपना बस रहते हुए कभी पैसों के लिए अपने को समर्पित नहीं करती यदि वह ऐसा कर रही है तो समझ लो कि उसके लिए कोई आश्रय और कोई आधार नहीं है! नारी की इन सभी निराशाजनक परिस्थितियों के लिए उत्तरदाई है समाज तथा पुरुष वर्ग जो उस पर अंकुश लगाकर शासन करता है पति प्रेम विहीन अनमेल विवाह की शिकार "नरक का मार्ग " की नायिका अपनी स्थिति का दोष माता-पिता समाज तथागत पति पर ही लगाती है | मेरे पतन का अपराध मेरे सिर पर नहीं मेरे माता-पिता और इस बूढ़े पर है जो मेरा स्वामी बनना चाहता था |प्रेमचंद के साहित्य की स्त्री सशक्त है वह 'कर्मभूमि' में उतरकर पुरुष के कंधा से कंधा मिलाकर देश की आजादी के लिए संघर्ष करती है, उसे 'गबन' कर लाये पैसों से अपने पति की भेंट में मिला चंद्रहार स्वीकृत नहीं है, वो एक गरीब किसान के दुख-दर्द की सहभागी बन अपना पतिव्रता धर्म भी निभाती है, वो 'बड़े घर की बेटी' भी है और उस सारे पुरुष वर्चस्व वाले परिवार में मानो अकेली मानवीय गुणों से संयुक्त है, वो मजबुरियों में पड़े अपने परिवार के लिये समाज के सामंत वर्ग से बिना डरे 'ठाकुर के कुएं' पे जाकर तत्कालिक व्यवस्था को चुनौती देती है और कभी एक माँ बनकर अपने बच्चे के लिये खुद की जान भी लुटा देती है

प्रेमचंद अपनी रचनाओं में महिला चरित्रों को कर्म, शक्ति और साहस के क्षेत्र में पुरुष के समकक्ष प्रस्तुत करते हैं पर महिला की नैसर्गिक अस्मिता, गरिमा और कोमलता को वो क्षीण नहीं होने देते। प्रेमचंद का साहित्य उन तमाम आधुनिक महिला सशक्तिकरण के चिंतको के लिये उदाहरण प्रस्तुतकरता हैं जो नारी को सशक्त बनाने के लिए उसके चारित्रिक पतन की पैरवी करते हैं और उसकी अस्मिता के भौंडे प्रदर्शनको नारी शक्ति का प्रतीक मानते हैं। इज्जत, शारीरिक सुंदरता, शारीरिक निर्बलता एवं उसके दैवीय गुणोंको महिमामंडित कर नारी को बल पूर्वक घर में बंद रहने पर मजबूर किया गया है। यही कारण है किपरिवार में पुरुष वर्ग कब्जा जमाये बैठे हैं। वहीं स्त्री अपने पारिवारिक स्थान से गिरते हुये शीघ्र हीगुलाम बना दी जाती है । यह एक दुखद बात है कि जिस घर को एक नारी इतनी मेहनत और लगन सेबनाती और चलाती है उसके त्याग और समर्पण की परवाह किसी को नहीं होती पुरुष समाज जब चाहेउसे बहार निकाल सकता है। भले सरकार और हमारी शिक्षा प्रणाली आज महिला को समाज कीमुख्यधारा में लाने के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रही है पर पुरुष मानसिकता को बदलने में अभी तक सबनाकाम

ही हैं| इस पुरुष वर्चस्व प्रधान समाज में, घर के बाहर की तो दूर घर-परिवार के अंदर हीमहिलाएं आज भी इस पुरुष प्रधान मानसिकता का बात शिकार होती हैं जहां उसे अपनी पसंद, अपनीइच्छाओं, जिजीविषाओं का हर पल गला घोंटना पड़ता है। इसी पुरुष मानसिकता की देन है कई छुपे हुएगहन अपराध, भ्रुणहत्या, दहेज, महिला उत्पीड़न, घरेलू हिंसा आदि। आज के वक्त में जब जनता दामिनी,गुड़िया और निर्भया पर हुए अन्याय का बदला लेने के लिये सड़को पर है इस दौर में प्रेमचंद का नारी केप्रति दृष्टिकोण सर्वाधिक प्रासंगिक बन पड़ता है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद नेअपनेकथा साहित्य (1908-1936 ई.) द्वारा नारी की दयनीयता का चित्रण कर उन्हें इससे ऊपर उठने के लिए नई सोच और नई दिशा प्रदान की .प्रेमचंद की नारी को जीवन की चरम शांति भारतीय आदर्शों में ही मिली है। प्रेमचंद के उपन्यास, कहानी की वे पात्राएँ जो आधुनिक थोथी सभ्यता के आकर्षण में फंस कर, फैशनेबल बनी, उसका दुखद अंत भी प्रेमचंद ने दिखाया है, अगर ऐसा नहीं हो पाया है तो उस पात्र से प्रायश्चित कराकर तप, त्याग दान, सेवा, सादगी, सहानुभूति, विनम्रता आदि भारतीय भावों में उसे ढाल कर उसका उत्थान किया गया है। इस प्रकार प्रेमचंद ने नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। प्रेमचंद नारी को प्रेम की शक्ति का रूप मानते हैं। वे नारी के अंदर सेवा, त्याग, बलिदान, प्रगतिशीलता, कर्तव्य, ज्ञान और पवित्रता आदि उदार भावों को देखना चाहते हैं। उन्होंने इन्ही आठ भावों को विभिन्न नारी पात्रों में स्थान -स्थान पर चित्रित करके दिखाया है। इनका मानना है यदि नारी इन गुणों को धारण करेगी तभी वह समाज और राष्ट्र के स्वरूप विकास में सहयोग कर सकती है।

संदर्भ सूची

1 मानसरोवर भाग -2

2. मानसरोवर भाग -3

.3. प्रेमचंद का नारीवाद , लेख , प्रियंका कुमारी, गांव कनेक्शन , वेबसाइट

4. सहचर – त्रैमासिक ई- पत्रिका

5. निबंध, कीर्ति भारद्वाज, साहित्य कुंज

6.प्रेमचंद- गोदान